वर्ष : 05 अंक: 81 अक्टूबर, 2022 मासिक पत्रिका www.hnnlive.tv मूल्य: ₹ 15/-
डाक पंजीयन संख्याः UA/DO/DDN/07/2019-2021
RNI No. /UTTHN/2016/68959

ग्लोबल हिन्दुस्तान न्यूज

एक दिन नारी शक्ति के नाम

हम भी किसी से कम नहीं

13 अनुपम की अनोखी कार्यशैली

08 सख्त तेवर की सौम्या अग्रवाल

10 प्रशासनिक क्षमता बेमिसाल

14 तेज तर्रार कप्तान सुधा सिंह

14 पहले ही प्रयास में फहराया परचम

दायित्वों के साथ साहित्य से संवाद

पवन कुमार–आईएएस

कर्दम मिश्र

भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी पवन कुमार अपने प्रशासकीय दायित्वों के सफलतापूर्वक निर्वहन के साथ–साथ साहित्य के साथ भी अपना संवाद बनाये रखते हैं। उर्दू शायरी में प्रतिष्ठित मुकाम हासिल करने के उपरान्त वे हिन्दी उपन्यास लिखने की तरफ मुड़े हैं। इस मोड़ का पहला पत्थर है वह उपन्यास, जिसमें उन्होंने श्री रामभक्त चिरंजीवी हनुमान के विषय में विस्तृत, शोधपरक और वैचारिक लेखन किया है।

विभिन्न जनपदों में जिलाधिकारी जैसे महत्वपूर्ण दायित्व निर्वहन करने के अतिरिक्त वे उ.प्र. शासन में विभिन्न विभागों यथा– कृषि, खाद्य रसद, सिंचाई, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग, आवास विभाग में विशेष सचिव, प्रबंध निदेशक पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम का पद संभाल चुके हैं। प्रशासनिक कार्यकुशलता व चुनाव प्रबंधन के लिए यह सम्मानित भी किए जा चुके हैं।

सरकारी सेवा में रहते हुए भी बेहतर तरीके से साहित्य के साथ संतुलन बनाये रखे हुए हैं। लेखन के लिए उन्हें कन्हैया लाल प्रभाकर सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार के मैथिली शरण गुप्त, जीशान मकबूल अवार्ड, तुराज सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार के सुमित्रा नंदन पंत अवार्ड आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

गजल पर उनके दो संग्रह 'वाबस्ता' (2012) और 'आहटें' (2017) प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने 'दस्तक' और 'चराग पलकों पर' का संकलन और संपादन भी किया है। उनकी गजलियात के बारे में मशहूर शायर शीन काफ निजाम और शम्सुर्रहमान फारूकी ने लिखा है कि पवन कुमार अपने कलाम के वसीले से फर्द से फर्दन बात करना चाहते हैं। उनके दो गीत 'पानी तेरा रंग' और 'सुन ले ओ साथिया' बहुत लोकप्रिय रहे हैं। कई म्यूजिक एलबम में उनके गीत–गजल रिलीज हो चुके हैं। उनकी गजलों को हरिहरन, साधना सरगम, रूप कुमार राठोड़, मो. वकील आदि आवाज दे चुके हैं। सम्प्रति प्रशासनिक उत्तरदायित्वों के साथ–साथ रचनाकर्म में व्यस्त हैं।

संस्कृत भाषा के उत्थान में योगदान

भाषा विभाग उत्तर प्रदेश शासन के नियंत्रणाधीन उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् की स्थापना 31 दिसंबर, 1976 को संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषाओं तथा उनके साहित्य के समुचित संरक्षण, प्रोत्साहन और विकास के लिए की गई है। इसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण उत्तर प्रदेश है। वर्तमान निदेशक पवन कुमार के कुशल निर्देशन में संस्थान ने वर्ष 2021–22 में अपनी योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यमों से खासी ख्याति अर्जित की है। संस्थान द्वारा संस्कृत भाषा की उन्नति एवं प्रसार हेतु तमाम कार्य किए जा रहे हैं जिनसे प्रदेश की जनता में संस्कृत में रुचि तो बढ़ ही रही है रोजगार–विहीन लोगों को रोजगार के बेहतर अवसर

उपलब्ध हो रहे हैं।

सरल संस्कृत सम्भाषण शिविर योजनाः संस्कृत भाषा को लोकप्रिय तथा जनसामान्य की बोलचाल की भाषा के रूप में संस्कृत का प्रयोग करने के उद्देश्य से साल 2018–19 में यह योजना प्रदेश के कानपुर, मथुरा, गोरखपुर, वाराणसी, मेरठ और लखनऊ में संचालित की गई थी जिसमें प्रदेश के कई स्कूलों, महाविद्यालयों में 40850 प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया। कोविड–19 जैसी महामारी में भी इस योजना के तहत 3600 शिक्षकों को आनलाइन प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षित किया गया।

योग प्रशिक्षण शिविर योजनाः योग की भाषा संस्कृत है। संस्कृत में योग के मूल पाठ पातंजल योग सूत्र, हठयोग प्रदीपिका इत्यादि ग्रंथ उपलब्ध हैं। योग को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से प्रदेश के समस्त जनपदों में योग केन्द्र की स्थापना की गई है। इस योजना को सफल बनाने के लिए हजारों लोगों को संस्थान की ओर से प्रशिक्षित किया गया है।

वास्तु एवं ज्योतिष प्रशिक्षण शिविरः आम जन को ज्योतिष का शुद्ध ज्ञान उपलब्ध कराने व इससे स्वरोजगार के अवसर सृजित हों इसलिए संस्कृत पढ़े बेरोजगार युवकों को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराना योजना का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए प्रदेश में वास्तु एवं ज्योतिष प्रशिक्षण केन्द्र बनाए गए हैं जिनमें वास्तु एवं ज्योतिष प्रशिक्षण दिया जाता है।

पौरोहित्य कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविरः पौरोहित्य कर्मकाण्ड प्रशिक्षण का ज्ञान प्रसारित करने व इससे स्वरोजगार के अवसर सृजित करने के दृष्टिङ्कोण से इच्छुक संस्कृत पढ़े बेरोजगार युवकों को प्रशिक्षण देकर रोजगार उपलब्ध कराने की इस योजना में सैकड़ों लोगों को प्रशिक्षण दिया गया। इस योजना से सैकड़ों लोगों को लाभ मिला है।

व्याख्यान गोष्ठी योजनाः उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान अपने स्थापना काल से ही संस्कृत के प्रचार–प्रसार को ध्यान में रखते हुए संस्कृत गोष्ठङ्की–व्याख्यान का आयोजन करता आ रहा है। इस योजना से संस्थान और संस्कृत प्रेमियों के मध्य संबंध स्थापित होता है तथा संस्कृत के प्रचार–प्रसार में काफी मदद मिलती है।

एकमासात्मक नाट्य प्रशिक्षण योजनाः संस्थान द्वारा समय–समय पर एकमासात्मक नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसके माध्यम से शिक्षण संस्थानों, रंगमंच से जुड़ी संस्थाओं तथा उच्चकोटि के निर्देशकों के माध्यम से रंगमंच का संस्कृत भाषा में प्रशिक्षण दिया जाता है। कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्रों द्वारा अंत में नाटक का मंचन किया जाता है। इन नाटकों को दर्शकों द्वारा भरपूर सराहना मिल रही है।

सिविल सेवा परीक्षा निरूशुल्क कोचिंग एवं मार्गदर्शन योजनाः संस्थान द्वारा लोक सेवा आयोग एवं राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा संचालित सिविल सेवा परीक्षा में संस्कृत साहित्य की सहभागिता और संस्कृत साहित्य को रोजगारोन्मुख बनाने के लिए सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को 10 माह का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस योजना से प्रदेश के कई जनपदों के विद्यार्थियों को लाभ मिल रहा है।

मण्डलीय छात्र प्रतियोगिताः संस्थान द्वारा संस्कृत के छात्रों के उत्साहवर्द्धन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसमें संस्कृत श्लोकान्ताक्षरी, संस्कृत गायन–गीत, संस्कृत भाषण, संस्कृत नाटक आदि प्रतियोगिताओं को आयोजन किया जाता है जिसमें प्रदेश के सैकड़ों छात्रों ने प्रतिभाग कर इस योजना का लाभ उठाया है।

इसके अलावा प्रदेश के आवासीय, संस्कृत विद्यालयों–महाविद्यालयों को यूपीएस सहित कम्प्यूटर, एक कम्प्यूटर मेज तथा बुक सेल्फ आदि उपकरणों का वितरण किया गया ताकि पठन–पाठन में सुविधा हो सके। इसी के साथ विद्यालयों को संस्कृत पाठ्यपुस्तकों की पांच–पांच प्रतियां भी प्रदान की जा रही हैं।

कम्प्यूटर के माध्यम से संस्कृत कक्षा संचालित करने की योजनाः इस योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2019–20 में उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त 35 आवासीय संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कम्प्यूटर द्वारा संस्कृत की कक्षाएं संचालित की गई जिनका भरपूर लाभ विद्यार्थियों को मिल रहा है।

पुस्तकालय का सुदृढ़ीकरणः संस्थान द्वारा विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पाठकों को अधिकाधिक पुस्तकें उपलब्ध हो सकें इसके लिए प्रतिवर्ष सैकड़ों पुस्तकों को क्रय किया जाता है। जिसका लाभ संस्कृत में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को मिल रहा है। यह योजना संस्कृत के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो रही है।

छात्रवृत्ति योजनाः उत्तर प्रदेश माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययन करने वाले मेधावी छात्रों के खाते में निश्चित धनराशि हस्तांतरित की जाती है जिससे सैकड़ों छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।

पुस्तक प्रकाशनः इस योजना के तहत संस्थान द्वारा पर्व पत्रिका, पंचांग प्रचार सामग्री और मासिक पत्रिका आदि का प्रकाशन किया जाता है। इसके माध्यम से संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार में खासी मदद मिल रही है।

इसी के साथ संस्कृत संस्थान द्वारा गुरु पूर्णिमा समारोह, महर्षि बाल्मीकि जयंती समारोह, आदि शंकराचार्य जयंती समारोह, धन्वन्तरि जयंती समारोह, स्थापना दिवस, गणतंत्र दिवस समारोह आदि समारोहों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है। इन समारोहों में महापुरुषों के बारे में जानने–समझने के लिए आमजन भारी संख्या में शिरकत कर रहे हैं।

पुरस्कार योजनाः पुरस्कार योजना के तहत संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष 50 विद्वानों को सम्मानित किया जाता है। इसके अंतर्गत विद्वानों को सम्मान धनराशि, अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, ताम्रपत्र आदि प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। इन पुरस्कारों में विश्वभारती, महर्षि बाल्मीकि, महर्षि व्यास, महर्षि नारद पुस्कार प्रदान किये जाते हैं। विशिष्ट पुरस्कारों में वेद पण्डित पुरस्कार, नामित पुरस्कार, विशेष पुरस्कार और विविध पुरस्कार प्रदान कर विद्वानों को सम्मानित किया जाता है।

***

जन्म– 08 अगस्त, 1975
जन्म स्थान– मैनपुरी, उत्तर प्रदेश
प्रमुख कृतियां– वाबस्ता (गज़ल/नज़्म संग्रह)
विविध
भारतीय प्रशासनिक सेवा वर्ष 2008 बैच उत्तर प्रदेश संवर्ग में सेवारत।
प्रथम प्रकाशित गजल संग्रह 'वाबस्ता' को साल 2013 का जयशंकर प्रसाद पुरस्कार।